International Journal of Applied Research 2024; 10(2): 123-125

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor (RJIF): 8.4
IJAR 2024; 10(2): 123-125
www.allresearchjournal.com
Received: 01-12-2023
Accepted: 06-01-2024

रीमा यादव
शोध छात्रा, हिंदी विभाग, ईश्वर शरण पीजी कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author:
रीमा यादव
शोध छात्रा, हिंदी विभाग, ईश्वर शरण पीजी कॉलेज, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, प्रयागराज, उत्तर प्रदेश, भारत

स्त्री शिक्षा विषयक बहसें और हिंदी पत्रिकाएं

रीमा यादव

'अब बालिका शिक्षा ग्रहण, हित पाठशाला दीजिए।
अध्यापिकाएं सच्चरित्रा, नियत सब मिलि कीजिए।।
सुख से पढ़ें बहिनें सभी, विचलित न हों निज धर्म से
पर शारदा के मर्म सह, बातों को जाने कर्म से।[1]

सारांश
स्त्री शिक्षा के संबंध में उपर्युक्त पंक्तियां अगस्त 1909 ई. में इलाहाबाद से श्रीमती यशोदा देवी के संपादन में प्रकाशित 'स्त्रीधर्म शिक्षक' के प्रवेशांक में 'बालिका प्रताप' शीर्षक से श्रीमती शारदा कुमारी, नवगछिया भागलपुर ने लिखी है। यहां यह ध्यान देने की बात है कि स्त्री शिक्षा के मामले में स्त्री द्वारा निकाली गई पत्रिका में कोई और नहीं बल्कि एक स्त्री लिख रही है। ये तीनों घटनाएं हमें सोचने का अवसर देती हैं, तत्कालीन समाज में महिलाओं की स्थिति से अवगत कराती हैं। यह सच है कि भारतीय समाज में आज महिलाओं की स्थिति जो है वह आज के सौ वर्ष पूर्व नहीं थी, उससे पूर्व की स्थिति और भी चिंताजनक थी। कहा जाता है कि समाज समय के साथ–साथ चलता है। समय के साथ चलने का अर्थ, आगे बढ़ना है और इस बढ़ने में अनेक घटनाएं, सोच, बाधाएं, रूढ़ियां छूटती हैं और टूटती भी हैं। सामंती व्यवस्था और सोच के टूटने में आधी आबादी की सामाजिक, शैक्षिक उन्नति है। इस उन्नति में ही देश की उन्नति है। 'सरस्वती' 1912 के अंक में संयुक्त प्रांत में 'स्त्री शिक्षा की अवस्था' शीर्षक लेख में पंडित रामनारायण मिश्र लिखते हैं, "हमारे देश में जागृति के लक्षण दिखाई दे रहे हैं। लोगों में विद्योन्नति की लालसा क्रमशः उत्पन्न हो रही है। अनेक विद्याविषयक सभाएं और अनेक नई–नई पाठशालाएं खुलती जाती हैं। सरकार भी लाखों रुपया शिक्षा प्रचार के लिए व्यय कर रही है। महाजनों, जमीदारों और राजा–महाराजाओं की रुचि भी विद्यादान की ओर बढ़ती जाती है। पर जो कुछ हो रहा है प्रायः बालकों के लिए, बालिकाओं की सुधि लेने वाले अभी थोड़े ही हैं।"[2] यह अंतर सामाजिक विषमता का है जिसे शिक्षा ही पाट सकती है।

कूटशब्दः स्त्री, शिक्षा, पत्रिका, समाज, परिवार, विसंगति, आत्मबल, गृहणी, अध्ययन

प्रस्तावना
यदि पूर्व के समय पर गौर करें तो समाज में महिलाओं की कैसी स्थिति थी? यह बताने की आवश्यकता नहीं। सदैव स्त्री को पुरुष से कमतर ही माना जाता रहा। अनेक सामंती कहावतों, श्लोकों में स्त्री को नीचा ही बताया गया जैसे 'विष्वासो नैव कर्तव्यः स्त्रीयु', त्रियाचरित्रम पुरुषस्य भाग्यं' आदि। धर्मों में भी स्त्रियों को वह सम्मान नहीं दिया गया जिसकी वह हकदार थीं। कहीं स्त्री को गवार, कहीं स्त्री को बाधक, पाप की बुनियाद तो कहीं रास्ते की बेडिनी बताया गया। 'चांद' में संकलित 'समाज में स्त्री का दर्जा' शीर्षक लेख में पं. हृषीकेश जी शर्मा, विशारद लिखते हैं," कुछ पता नहीं, एक अनंत अनादि काल से पुरुष स्त्री को 'अबला' के नाम से पुकारता चला जा रहा है। जो रण में जाकर युद्ध करती थी, बड़े बड़े धुरंधर ब्राह्मणवादियों की सभा में निर्भय होकर ब्रह्म विद्या विषय पर शास्त्रार्थ करती थी, जिसने शासन को संचालित कर अपनी योग्यता प्रमाणित की, उस स्त्री का समाज में कितना नीचा दर्जा बतलाया गया है, उस पर कैसी स्वार्थपूर्ण नीचता से आक्रमण किया गया है और किया जाता है, इस पर जब मैं वास्तविक विचार करने लगता हूं तो हृदय असह्य वेदना से छटपटाने लगता है।"[3] ऐसी परिस्थिति में स्त्री शिक्षा की बात करना तो दूर बल्कि जरूरत थी स्त्री–पुरुष समानता की बात करना। प्रायः स्त्रियों को घरेलू काम काज की परिधि में ही देखा गया। प्रारंभ में स्त्री शिक्षा के नाम पर पतिव्रत सेवा भावना, घरेलू कार्य व्यवहार ज्ञान तक ही सीमित रखा गया।

स्त्री के उत्थान में उस दौर की पत्रिकाओं ने बड़ी भूमिका निभाई। पत्रिका 'सुधा' के एक अंक में यह बात ध्यान देने योग्य है, "जो माता अपनी संतान को सच्चरित्र और नीरोग बनाती है, जो अध्यापिका अपनी शिष्याओं को सुयोग्य बनाती है, जो नर्स अपने रोगियों की भली–भांति सेवा करती है, वह वास्तव में जाति की उतनी ही सेवा करती है, जितना कि एक सेनापति युद्ध में लड़कर करता है। इसलिए स्त्री जाति के उद्धार पर जितना भी जोर दिया जाए, थोड़ा है। शिक्षा से आत्मबल उत्पन्न होता है, और आत्मज्ञान को प्राप्त कर मनुष्य अपनी अच्छी प्रवृत्तियों का विकास और बुरी वृत्तियों का दमन कर सकता है।"[4] हमें यह भी ध्यान देना होगा कि प्राचीन दौर में इसी देश में गार्गी, मैत्रेयी और सुलभा जैसी स्त्रियां भी हुई जिनका व्यक्तित्व एक इतिहास है परंतु इसी देश समाज में यह बात भी अस्वीकार नहीं की जा सकती कि "पौराणिक काल में यहां घोर अविद्यांधकार फैला रहा। उस समय स्त्री को शुद्र ठहराकर उससे विद्याध्ययन का अधिकार छीन लिया गया।"[5] पर यह अंधेरा और बाधाएं अधिक देर तक नहीं रह सकीं, तमाम समाज सुधारकों, संस्थाओं यहां तक कि खुद स्त्रियां भी आगे आकर इस अंधकार में शिक्षा की ज्योति जगाने का काम करती हैं। स्त्रियों के विद्या की महिमा का गुणगान करते हुए 'कुमारी दर्पण' में श्री मति उषा देवी लिखती हैं–

"विद्या सीखो यतन से विद्या बुद्धि की खान।
विद्या रतन अमोल है विद्या करत महान।।
विद्या स्त्री को रूप है विद्या धन है गूढ़।
विद्या बंधु विदेश में विद्या बिन सब मूढ़।।"[6]

इस तरह लेखिका विद्या को स्त्री का रूप मानती है और विद्या के सीखने की बात करती हैं। स्त्री समानता और शिक्षा के संबंध में महात्मा गांधी 'मेरे सपनों का भारत' में स्त्री और पुरुष को समान दर्जे का बताते हैं। उनका मानना है "स्त्रियों को उनकी मौलिक स्थिति का पूरा बोध करावें और उन्हें इस तरह तालीम दें, जिससे वे जीवन में पुरुषों के साथ बराबरी के दरजे से हाथ बंटाने लायक बनें।"[7] गांधी स्त्रियों की शिक्षा की बात करते हैं पर व्यापार और नौकरी के लिए नहीं जो आज अप्रासंगिक लग सकता है पर उस अंधकार में स्त्री शिक्षा का समर्थन ही चिराग़ था। यद्यपि प्रारम्भ में स्त्री शिक्षा का उद्देश्य गृह कार्य में कुशलता, परिवार की सेवा भावना के विषय में था। उस दौर की कुछ लेखिकाएं भी स्त्री के इसी शिक्षा के बारे में विभिन्न पत्रिकाओं में लेख और कविताएं लिख रहीं थीं। 'गृहलक्ष्मी' पत्रिका से एक उदाहरण देखिए–

"खा पीकर आराम करो कुछ, फ़िर घर के धंधे को कर
सीना और पिरोना सीखो, हे लड़कियों ध्यान में धर
यदि पढ़ना सीना व पिरोना, रोटी करना सीखोगी
पति के घर पाओगी, आदर सुख से समय विताओगी।"[8]

स्त्रियों के गृहकार्य शिक्षा के समर्थन में गांधी का तर्क है, "दंपत्ति के बाहरी कामों में पुरुष सर्वोपरि है। भीतरी कामों में स्त्री की प्रधानता है। इसलिए गृह व्यवस्था, बच्चों की देखभाल, उनकी शिक्षा वगैरह के बारे में स्त्री को विशेष ज्ञान होना चाहिए।"[9] इसी क्रम में आगे स्त्री शिक्षा को लेकर गांधी द्वारा 27/02/1937 को 'हरिजन' में की गई टिप्पणी भी ध्यान देने योग्य है, यहां आप विचारों में परिवर्तन देख सकते हैं, गांधी के अनुसार, "मैं स्त्रियों की समुचित शिक्षा का हिमायती हूं, लेकिन मैं यह भी मानता हूं कि स्त्री दुनिया की प्रगति में अपना योग पुरुष की नकल करके या उसकी प्रतिस्पर्धा करके नहीं दे सकती।––उसे पुरुष का पूरक बनना चाहिए।"[10]

यद्यपि यहां भी बात पूरकता की है स्वच्छंदता की नहीं। उस दौर में केवल गांधी ही ऐसा नहीं सोच रहे थे बल्कि स्त्री लेखिकाएं भी। पत्रिका 'माधुरी' के एक अंक में 'स्त्रियों को कैसी शिक्षा और साहित्य की आवश्यकता है?' शीर्षक से कुमारी सत्यवती देवी, सारन का लेख जिसमें वे स्त्रियों की शिक्षा के बारे में देश प्रेम, स्वास्थ्य ज्ञान, चित्रकारी, पाककला, धात्री–विद्या (दाई का काम), घरेलू वैद्य– विद्या, मनोविनोद, सत्साहित्य और जोड़–घटाव ज्ञान अर्जित करने के लिए प्रेरित करती हैं। अंकीय ज्ञान का एक उदाहरण देखिए, "जो स्त्रियां हिसाब नहीं जानती, उन्हें कोयले की लकीरें और कंकड़ियों से हिसाब जोड़ना पड़ता है। बहुतेरी स्त्रियां ठगी जाती हैं। स्त्रियों के ऊपर घर का काम निर्भर रहता है, अगर वे ही मूर्ख हुई तो, घर गृहस्थी कैसे चलेगी?"[11] इसी विषय पर पत्रिका 'सुधा' के एक अंक में चर्चा शामिल है जिसमें स्त्री पाठ्य पुस्तकों के साथ शिशु–पालन, परिकथा, काम विज्ञान, प्रसूति विज्ञान का उल्लेख है। स्त्री पाठ्य पुस्तकों में नवल किशोर प्रेस की 'स्त्री–सुबोधनी' की प्रशंसा कुछ इस तरह है, "स्त्रियों के लिए सबसे उपयोगी पुस्तक जो मेरी दृष्टि से गुजरी है, वह नवल किशोर प्रेस की स्त्री सुबोधिनी है। इस पुस्तक की भाषा और शैली पुराने ढंग की होने पर भी इसमें स्त्रियों के काम की बहुत सी बातें हैं।"[12] इसके अतिरिक्त वे पत्रिकाएं जिनमें स्त्रियोपयोगी स्तंभ रहते थे उसका जिक्र भी इस अंक में है, "यद्यपि सुधा, माधुरी, ज्योति और मनोरमा आदि पत्रिकाओं में स्त्रियोपयोगी स्तंभ रहते हैं, तथापि स्त्रियों के लिए इस समय केवल दो ही अच्छी पत्रिकाएं निकलती हैं। उनमें से एक तो प्रयाग का 'चांद' है और दूसरी वहीं की 'गृहलक्ष्मी'। चांद की सज–धज बहुत बढ़िया हैद्य अनेक लेख भी अच्छे निकल चुके हैं।"[13]

अब तक की बात स्त्रीपयोगी शिक्षा की आवश्यकता और अनिवार्यता की रही पर स्त्री शिक्षा के लिए एकेडमिक या विद्यालयी स्तर की शिक्षा की क्या स्थिति थी यह भी विचारणीय है। पत्रिका 'सरस्वती' के जनवरी 1907 अंक में कुछ इस तरह उल्लेख है, 'संयुक्त प्रांत में 23074840 स्त्रियां हैं जिनमें मात्र 0.96 प्रतिशत शिक्षित हैं।'[14] स्कूलों में लड़कियों की उपस्थिति बहुत कम थी। 1907 में 767 प्राइमरी कन्या पाठशालाएं थीं। 1909 में बढ़कर 938 हो गई। 1911 में कोई विशेष उन्नति नहीं हुई। केवल 941 पाठशालाएं थीं। 1907 में 30963 कन्याएं पढ़ती थीं।'[15] पत्रिका 'चांद' में दिल्ली के इंद्रप्रस्थ कालेज में महिलाओं की शैक्षिक स्थिति का जिक्र कुछ इस तरह किया गया है 'दिल्ली का इंद्रप्रस्थ हिंदू गर्ल्स स्कूल और इंटरमिडियएट कॉलेज एक ऐसी संस्था है, जिसके लिए भारतवासी अभिमान कर सकते हैं। इस स्कूल ने आज से 25 वर्ष पहले एक भाड़े के मकान में केवल 9 लड़कियों को लेकर अपना कार्य आरंभ किया था पर चौथाई शताब्दी के अथक परिश्रम और निरंतर अध्यवसाय के बाद आज उपाधि विद्यालय तक पहुंचाने का प्रयत्न कर रहे हैं।"[16] कालेज स्तर पर स्त्री शिक्षा के लिए यह प्रयास रेखांकन के योग्य है। हमें इस तरफ़ भी ध्यान देना होगा कि स्त्री शिक्षा पर व्यक्तिगत प्रयास के साथ–साथ सरकार की क्या रूचि थी? यह तत्कालीन लेफ्टिनेंट गवर्नर के एक वक्तव्य से समझा जा सकता है, "संयुक्त प्रांत में आरंभिक शिक्षा की पाठशालाओं की संख्या जरूरत से अधिक कम है क्योंकि दस–दस गांव पीछे एक–एक पाठशाला है। ––स्त्री शिक्षा की उन्नति में बहुत सुस्ती है।"[17] इस संबंध में 'चांद' के छठें अंक में लेडी इरविन द्वारा अखिल भारतीय महिला शिक्षा कांफ्रेंस में किए गए संवाद और विवाद को भी देखा जा सकता है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि समय के साथ–साथ समाज में तमाम उतार–चढ़ाव के बीच जन जागरूक होता गया और स्त्री शिक्षा का ग्राफ दिन–प्रतिदिन बढ़ता गया। आज किसी भी

क्षेत्र में महिलाएं सम्मानजनक स्थिति में हैं और प्रारंभिक समय–समाज का अध्ययन हमें वर्तमान की प्रगति बताता रहेगा। गांधी के कथनानुसार कोई भी कार्य तीन चरणों से होकर गुजरता है शुरुआत, संघर्ष और सफ़लता। कहना गलत न होगा कि आज आधी आबादी, तीसरे चरण अर्थात सफलता के मुकाम पर है।

संदर्भ सूची

1. स्त्रीधर्म–शिक्षक, कार्तिक 1969, बालिका प्रताप, श्री मति शारदा कुमारी, नवगछिया भागलपुर
2. पंडित रामनारायण मिश्र, बी. ए. (1912) संयुक्त प्रांत में स्त्री–शिक्षा की अवस्था, सरस्वती, भाग 13, संख्या 4 (अप्रैल) 219
3. पं. हषिकेश जी शर्मा, विशारद, समाज में स्त्री का दर्जा, चांद, वर्ष–7, खंड–1 : 824
4. स्त्री समाज, सुधा बैसाख 305
5. वही
6. विद्या की महिमा, श्री मति उषा देवी, कुमारी दर्पण, अप्रैल–मई 1916
7. मेरे सपनों का भारत, महात्मा गांधी, राजपाल प्रकाशन, पृष्ठ–189
8. गृहलक्ष्मी, कार्तिक, संवत 1971
9. स्त्रियों की शिक्षा, मेरे सपनों का का भारत, महात्मा गांधी
10. हरिजन, 27–02–1937
11. स्त्रियों को कैसी शिक्षा और साहित्य की आवश्यकता है? कुमारी सत्यवती, सारन, माधुरी, पौष 308 अंक
12. सुधा, वैशाख, 305
13. वही, पृष्ठ – 443
14. सरस्वती, जनवरी 1907, भाग 8 संख्या 1:22
15. सरस्वती, 1 अप्रैल 1912, भाग 13: संख्या 4:220
16. चांद, वर्ष 7, खंड 2 , संख्या 5
17. स्वदेश–बांधव, मार्च 1909, भाग 4 अंक12:9